Nai Dunia (Indore), 23rd June 2024, Front Page – plus 02

डीआरडीओ के हाथ मजबूत करेगा इंदौर

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर : हिमालय व पर्वतीय इलाकों पर रहने वाले सेना के जवानों को श्वास संबंधित परेशानी, ठंडक में उच्च स्तरीय गर्म कपड़े, अधिक ऊंचाई पर ज्यादा समय रहने के दौरान होने वाली बीमारियों के दौरान बेहतर दवाएं व संसाधन उपलब्ध हो सके। इस संबंध में देश का रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) काम कर रहा है।

इंदौर के रिसर्चर भी इस दिशा में काम करें, इस संबंध में हम आइआइटी इंदौर से चर्चा कर रहे हैं। इसी संबंध में मैंने शनिवार को आइआइटी इंदौर के छात्रों से बात भी की। यह बात डीआरडीओ के महानिदेशक (जीवन विज्ञान) डा. उपेन्द्र कुमार सिंह ने नईदुनिया से विशेष चर्चा में कही। उन्होंने कहा कि वो देश से बाहर जाने के बजाय भारत में रहकर सेना के लिए रिसर्च के कार्य करें। वर्तमान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) के उपयोग को लेकर वो बोले कि जिस तरह

उपेन्द्र कुमार सिंह। • नईदुनिया

- आइआइटी के छात्र प्रमुख रक्षा संस्थान के लिए रिसर्च करेंगे
- तकनीक का उपयोग होता है बेहतरी व बर्बादी के लिए

न्यूक्लियर तकनीक का उपयोग बेहतरी व बर्बादी दोने के लिए होता है। उसी तरह एआइ का उपयोग यदि बुद्धिमत्ता से किया जाए तो वो मनुष्य के लिए अभिशाप के बजाए वरदान साबित हो सकती है।

गौरतलब है कि उपेन्द्र कुमार सिंह ने देअवि में 1987 से 1989 में एमएससी कंप्यूटर साइंस के विद्यार्थी रहे हैं।

अब 22 हजार करोड़ की तकनीक व उत्पाद निर्यात कर रहे : डीआरडीओ पहले सात हजार करोड़ के उत्पाद व तकनीक अन्य देशों को निर्यात करता था। आज यह बढ़कर 22 हजार करोड़ रुपये हो गई।

जवान 40 किलो का वजन भी आसानी से उठा सकेंगे

पहाड़ व दुर्गम क्षेत्रों में सैनिकों को 20 से 40 किलो का वजन लेकर चलना पड़ता है। इसमें हथियार व भोजन शामिल होता है। डीआरडीओ ने रोबिटिक्स के माध्यम से एक्सोस्केलटन तैयार किया है, जिसे पहनकर सैनिकों को ऐसा लगता है कि वो कुल वजन का आधा ही वजन उठा रहे हैं। इससे पहनने पर मांसपेशियों की सुरक्षा होती है और शारीरिक क्षमता बढ़ती है। सीआरपीएफ के जवान इसका उपयोग कर रहे हैं। जल्द ही सेना के जवान भी इसका उपयोग करेंगे।